गुलाम कवियित्री

फिलिस व्हीट्ली

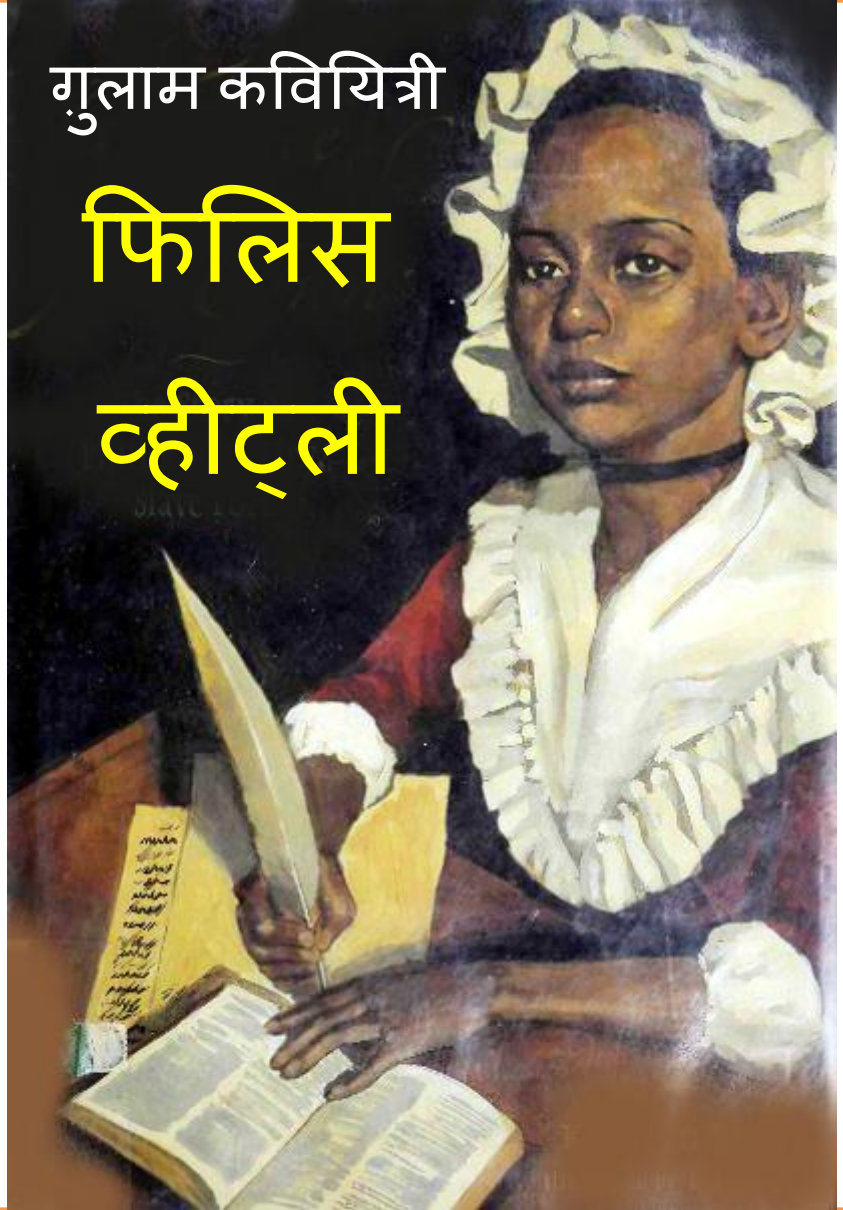

उसकी अपनी आवाज़

एक ग़ुलाम कवियित्री

फिलिस व्हीट्ली

की कहानी

कैथरीन लास्की

चित्रसज्जा : पॉल ली

अफ्रीका के सुखमय जीवन से जबरन जुदाई।

शुरुआत में पहले सिर्फ अँधेरा था, घुप्प अँधेरा। फिर वह अँधेरा एक सियाही में बदल गया, और चरमाराते हुए समुद्री जहाज़ के उस कक्ष में कुछ परछाइयां सी दिखाई दीं। हवा में एक बोझिल सी दुर्गन्ध थी। उस छोटी लड़की को कुछ आकृतियां सी दिखाई दीं, कुछ आदमियों, औरतों, और बच्चों की, जिनमें से अधिकांश अफ्रीका के पश्चिमी तट पर स्थित सेनेगांबिया देश के थे।

इसके अलावा उसने देखीं इधर-उधर भागते कुछ चूहों की आकृतियां, और लोहे की काली बेड़ियों की चमक। सारे आदमी इन बेडियों में बंधे थे। गुलामों से भरा यह जहाज़ अफ्रीका के तट से रात के घुप्प अँधेरे में रवाना हुआ था। अगर ये गुलाम देख और समझ पाते कि उन्हें उनकी मातृभूमि से जबरन दूर ले जाया जा रहा है, तो शायद वे बेड़ियों समेत ही समुद्र में कूद पड़ते।

अब उसे ऊपर से बेड़ियों के खनकने का आवाज़ आई। कुछ आदमियों को जहाज़ के ऊपरी हिस्से पर नाचने के लिए ले जाया गया था। रोज़ाना उन्हें एक बांसुरी की आवाज़ के साथ नाचना पड़ता था। क्योंकि बिना नाचे उनके शरीर के अंग जकड जाते, और उनकी मांसपेशिया कमज़ोर पड़ जातीं, जो कि अच्छा नहीं होता। इस तरह बाजार में उनकी कीमत कम मिल पाती। तभी एक और चित्र उसके मानस-पटल पर उभरने लगा।

रात का अँधेरा भोर की लाली में बदल रहा था। अब उन परछाइयों की जगह एक अकेली महिला चलती नज़र आ रही थी, जिसका आंचल हवा में लहरा रहा था। उसके हाथ में कद्दू के खोल को सुखा कर बनाया एक कटोरा था। सूर्य की ओर मुख करके घुटनों के बल बैठ कर उसने दोनों हाथों से कटोरा ऊपर उठाया, और उसमें भरे जल को सूर्य को अर्पण कर दिया। यह महिला उसकी माँ थी। वह प्रतिदिन सूर्य का स्वागत इसी प्रकार करती थी। लेकिन यह छोटी लड़की अब अपनी माँ को कभी दोबारा नहीं देख पायेगी, हालाँकि सूर्य को जल चढ़ाते हुए उसकी माँ की यह तस्वीर उसकी स्मृति में सदा अंकित रहेगी। वह इस स्मृति को इस प्रकार संजो कर रखेगी जैसे वह कोई बहुमूल्य रत्न हो। इसके अलावा ताड़ के लम्बे पेड़ों, हरी चमकती लौकियों व कद्दुओं के खेतों, और लहलहाती लम्बी घास के मैदानों की अपनी स्मृतियों को भी वह संजो कर रखने का प्रयत्न करेगी।

हम इसको फिलिस कह कर पुकारेंगे।

लगभग दस सप्ताह की समुद्री यात्रा के बाद यह जहाज़ अब बोस्टन के तट पर आ पहुँचा था, और उसे बीच-स्ट्रीट के बंदरगाह पर रोका गया था। यह १७६१ की ग्रीष्म ऋतु का एक सुहावना दिन था। सभी गुलामों को नहला-धुला कर उनकी सांवली त्वचा पर तेल लगा कर उसे चमकदार बना दिया गया था। लेकिन जहाज़ के मालिक मिस्टर फिच को यह दृश्य बिलकुल पसंद नहीं आ रहा था। "क्या बेकार खेप है यह", वह बुदबुदाया। उसका तात्पर्य था कि इस समूह में औरतें और बच्चे तो बहुत थे, लेकिन ऐसे हृष्ट-पुष्ट नौजवानों की संख्या कम थी, जिनकी बाजार में अच्छी कीमत मिल पाती। जॉन एवेरी, वह दलाल जिसने गुलामों की बिक्री का ठेका लिया था, भी काफी चिंतित था। उसने तुरंत ही एक छोटी, लगभग वस्त्रहीन लड़की को बहुत कम कीमत में बेंचने का फैसला लिया। वह लड़की दरी का एक टुकड़ा अपने शरीर से लपेटे ठण्ड में ठिठुरती खड़ी थी। उसकी उम्र कोई सात वर्ष की रही होगी, और उसके आगे के दो दांत गायब थे। देखने में वह बहुत कमज़ोर लग रही थी। एवेरी को शक था कि शायद ही वह न्यू-इंग्लैंड की कड़ाके की सर्दी वाला मौसम बीतने तक जीवित रह पाए।

सजीले वस्त्रों में खड़े एक महिला और पुरुष उस दलाल से उस लड़की के बारे में बातचीत कर रहे थे, लेकिन उनकी अंग्रेजी में कही बातें लड़की बिलकुल नहीं समझ पा रही थी।

सुज़ाना व्हीट्ली को घर का काम-काज करने के लिए थोड़ी अधिक उम्र की लड़की की तलाश थी, लेकिन अभी तो इसी दुबली-पतली लड़की से ही काम चलाना पड़ेगा। इसके अलावा, जिस तरह वह बेचारी लड़की दरी का टुकड़ा शरीर से चिपकाये सहमी सी खड़ी थी, वह दृश्य उसके दिल को छू गया। उसे उस लड़की का चेहरा भी भा गया।

चन्द डॉलर में उस लड़की का सौदा हो गया, और वह औरत उसे साथ लेकर घाट के नज़दीक ही उनके इंतज़ार में खड़ी बग्घी की तरफ बढ़ गई।

'तुम इसे क्या कह कर पुकारोगी?' जॉन व्हीट्ली ने अपनी पत्नी से पूछा।

सुज़ाना सोच में पड़ गई, लेकिन जैसे ही बग्घी चलने लगी, उसने पीछे मुड़ कर उस जहाज़ की ओर देखा जिसमें वह लड़की आई थी। जहाज़ के पिछले भाग पर जहाज़ का नाम "फिलिस" लिखा था।

"फिलिस, ... हम इसे फिलिस कह कर पुकारेंगे।"

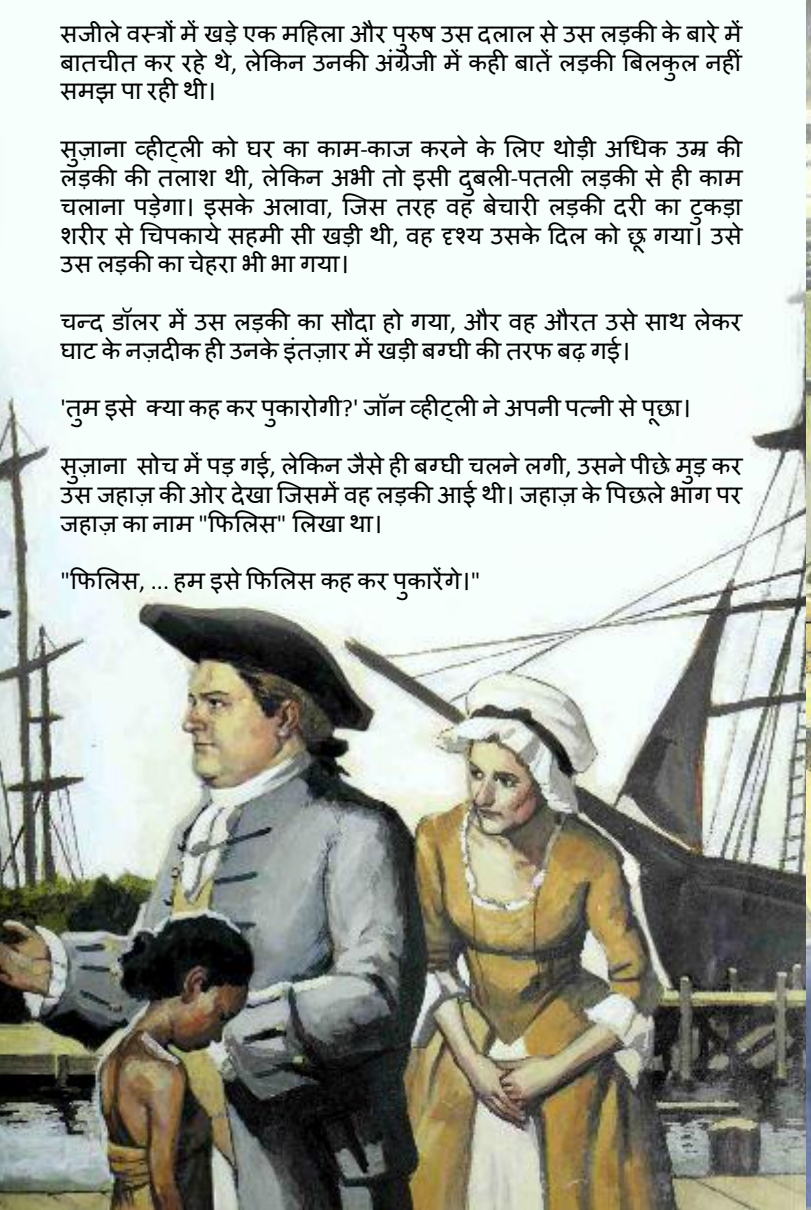

यहाँ के दृश्य और गंध एकदम अपरिचित से थे। बंदरगाह और उसमें खड़े जहाज़ों से कोलतार और तारपीन की गंध के भपके आ रहे थे। और एक इमारत से, जिसके दरवाज़े खुले हुए थे, शराब की तेज़ बू आ रही थी। और फिर जब बग्घी बाजार के बीच पहुँच कर रुकी, चाय की गंध एक बादल की तरह चारों ओर फैली हुई थी। लेकिन जल्दी ही चाय की गंध की जगह मछलियों की महक ने ले ली। फिलिस ने इतनी सारी मछलियों की महक एकसाथ कभी अनुभव नहीं की थी।

उसके चारों ओर अधिकांश चेहरे गोरे लोगों के ही थे, लेकिन साथ ही कुछ गेहुँए, कुछ पीले-भूरे से, और कुछ सांवले-काले भी थे। जो आदमी बग्घी चला रहा था, वह काले रंग का था। हर कोई बहुत जल्दी में लग रहा था। लम्बी-लम्बी पोशाकें पहने कुछ महिलाएं तेज़ी से चली जा रही थीं। बोस्टन के यह दृश्य फिलिस के लिए पूरी तरह अपरिचित और अनजान थे।

बग्घी एक लाल ईंटों से बने भव्य बंगले के आगे रुक गई, जो किंग स्ट्रीट और मैकेरल स्ट्रीट के कोने पर स्थित था।

न्यू इंग्लैंड के गुलामों के साथ दक्षिण के गुलामों की अपेक्षा थोड़ा भिन्न व्यवहार किया जाता था। भौतिक रूप से उनका जीवन अपेक्षाकृत कुछ आसान था। लेकिन न्यू इंग्लैंड में भी किसी गुलाम को ऐसा व्यवहार नसीब नहीं हुआ होगा, जैसा फिलिस को हुआ। वैसे तो सुज़ाना व्हीट्ली को एक निजी सेवक की आवश्यकता थी, लेकिन जल्दी ही उसने गौर किया कि जो सेविका उसे मिली थी, वह उसकी अपेक्षा से कहीं अधिक बुद्धिमान और प्रतिभाशाली थी। जिस प्रकार फिलिस उसके शब्दों को ध्यान से सुनती और उनका अर्थ सीख लेती, उससे यह एकदम स्पष्ट था। फिर एक दिन उसने देखा कि फिलिस कोयले के एक टुकड़े से घर के बाहर कुछ अक्षर लिखने की कोशिश कर रही थी।

दक्षिण में किसी भी अश्वेत व्यक्ति को शिक्षित करना कानून के खिलाफ था। उत्तर में हालाँकि ऐसा कोई कानून नहीं था, लेकिन फिर भी उन्हें शिक्षित करने का कोई प्रचलन नहीं था। सुज़ाना व्हीट्ली सोच में पड़ गई, कि क्या किसी अफ्रीकन नीग्रो को पढ़ाना-लिखाना संभव है। क्या वे भी बाइबिल पढ़ कर उसका अर्थ समझ सकते हैं ?

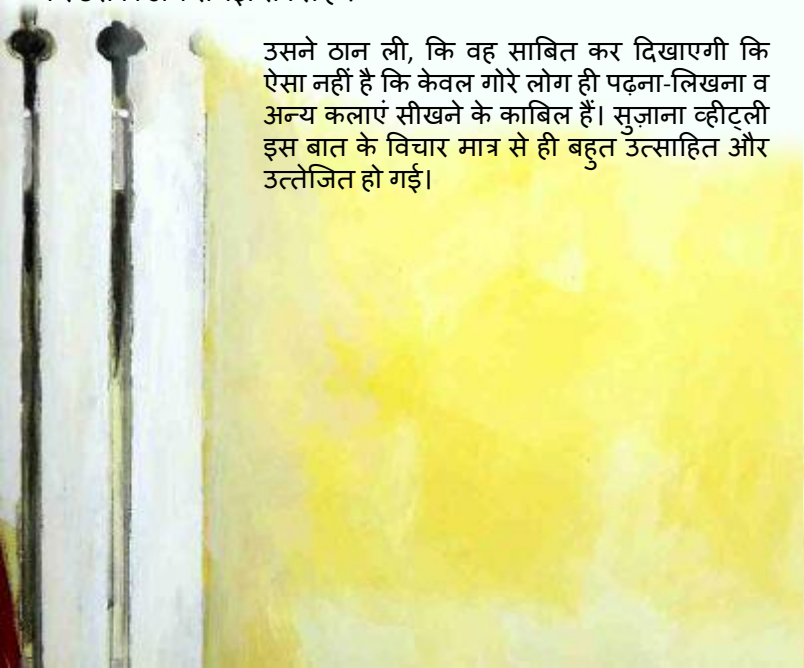

उसने ठान ली, कि वह साबित कर दिखाएगी कि ऐसा नहीं है कि केवल गोरे लोग ही पढ़ना-लिखना व अन्य कलाएं सीखने के काबिल हैं। सुज़ाना व्हीट्ली इस बात के विचार मात्र से ही बहुत उत्साहित और उत्तेजित हो गई।

मोमबत्ती, कलम और सियाही

एक मोमबत्ती टिमटिमा रही थी। उस कमरे के एक कोने में जहाँ फिलिस मेज़ पर बैठी बाइबिल के अंशों की नक़ल बना रही थी, मोमबत्ती की लौ से निकलती रौशनी ने उसके चारों ओर एक सुनहरा कवच सा बना दिया था। सुज़ाना व्हीट्ली फिलिस की प्रगति से इतनी प्रभावित थी, कि उसने उसे बहुत सी पुस्तकें व अन्य वस्तुएं - एक मोमबत्ती, कलम और सियाही, दे दी थीं जिससे वह अपने खाली समय में पढाई कर सके।

फिलिस को अमेरिका आये अभी मात्र सोलह महीने ही हुए थे, और इतने कम समय में उसने न केवल अंग्रेजी बोलना सीख लिया था, बल्कि वह लिख भी सकती थी, और बाइबिल के कुछ मुश्किल अंशों को पढ़ कर समझ भी सकती थी। इनमें से कइयों की उसने नक़ल भी बना ली थी। वह केवल नौ वर्ष की थी, और वह इतना कुछ सीख गई थी, जितना वहां की बहुत सी गोरी औरतें भी शायद ही जीवन भर में सीख पाती हों।

फिलिस ने शुरुआत तो अंग्रेजी से की, लेकिन फिर उसने लैटिन, ग्रीक, भूगोल और गणित का भी अध्ययन किया। लेकिन उसका सबसे प्रिय विषय था - कविता। किसी कविता के माध्यम से उसके मन में जो स्पष्ट और पैनी आकृतियां चित्रित होती थीं, वे उसे बहुत भाती थीं।

१७६५ की एक दोपहर मेहमानों को भोजन परोसते समय फिलिस ने एक आश्चर्यजनक दास्तान सुनी। मिस्टर हसी और मिस्टर कॉफिन, जो हाल ही में ननटकेट नामक द्वीप की यात्रा से वापस आये थे, अपनी बोस्टन पहुँचने की डरावनी समुद्री यात्रा का ब्यौरा सुना रहे थे। उनका जहाज़ ठण्ड के मौसम में आये एक तूफ़ान के कारण डूबते-डूबते बचा था। वे बता रहे थे कि समुद्र की लहरें पहाड़ों सी ऊंची थीं, और किस प्रकार चीखती तेज़ हवाओं ने उनके जहाज़ के पाल को तार-तार, और मस्तूल को क्षत-विक्षत कर दिया। आखिर वे दोनों कैसे बचे होंगे? क्या उन्हें मौत के डर ने नहीं सताया ? उसके मानस पटल पर तूफ़ान में फंसे उन दोनों व्यक्तियों के चित्र उभरने लगे। क्या यह एक चमत्कार नहीं है कि वही दोनों अब सुरक्षापूर्वक सुख से बैठे व्हीट्ली परिवार से साथ भोजन कर रहे थे।

इस घटना के कुछ ही समय बाद फिलिस ने मिस्टर हसी और मिस्टर कॉफिन की डरावनी यात्रा पर एक कविता लिखी। दो वर्ष बाद, १७६७ में, न्यूपोर्ट मरकरी नाम के अख़बार में यह कविता प्रकाशित हुई। माना जाता है कि यह फिलिस की सर्वप्रथम प्रकाशित कविता थी। उस समय फिलिस केवल चौदह वर्ष की थी।

सुज़ाना व्हीट्ली दंग रह गई। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसका यह छोटा सा प्रयोग, जिसका मक़सद था यह सिद्ध करना कि अफ्रीका के अश्वेत लोग भी पढ़-लिख सकते हैं, सफलता की ऐसी ऊंचाइयों को छू लेगा।

वह इस बात से इतनी उत्साहित हो गई, कि वह फिलिस को बोस्टन के सर्वाधिक संभ्रांत परिवारों के घरों में ले जा कर वहां उसका कविता पाठ करवाने लगी।

"जी नहीं, धन्यवाद", फिलिस ने कहा, जब उनमें से एक घर की मालकिन ने उसे अन्यों के साथ चाय की मेज़ पर बैठने के लिए कहा। उसने नज़दीक ही पड़ी एक छोटी मेज़ की ओर इशारा किया, और वहां जाकर बैठ गई। इससे घर की मालकिन ने थोड़ी राहत ही महसूस की, और उसने अपने गुलामों से इस नीग्रो कवियित्री के लिए, जिसने अभी इतनी ख़ूबसूरत कवितायें सुनाई थीं, उसी छोटी मेज़ पर चाय परोसने को कहा।

लेकिन एक बार, जब घर की मालकिन और उसकी तीन पुत्रियों को यह पता लगा कि यह नीग्रो लड़की किस जहाज़ पर सवार होकर अमेरिका लाई गई थी, वे बड़ी असहज हो गईं। यह घर था टिमोथी फिच, यानि उस जहाज़ के मालिक का। जब फिलिस ने भी यह जाना, तो उसे लगा कि वह वहां एक मिनट भी और नहीं रुक पायेगी, और वह वहां से चलने लगी। लेकिन श्रीमती फिच ने उससे रुकने का आग्रह किया। उनकी पुत्रियों चुपचाप बैठी रहीं। सभी के लिए वह दोपहरी बड़ी असहज और लज्जाजनक रही।

फिलिस उसी इंसान के घर बैठी चाय की चुस्कियां ले रही थी, जो उसे जबरन उठा लाने के लिए जिम्मेदार था। श्रीमती फिच को एक ख़ूबसूरत चायदानी से चाय उंडेलते देख कर शायद उसे अपनी माँ की वह छवि याद आ गई होगी, जब वह कद्दू के खोल से बने कटोरे से भोर के सूरज को जल अर्पण करती थी। यह वही सूर्य तो था, जो अफ्रीका में भी चमकता था, और यहाँ बोस्टन में भी। और ये सभी महिलायें भी तो माएं थीं। शायद इसी बात ने फिलिस को सबसे अधिक स्तब्ध और क्षुब्ध कर दिया था। गोरी हों या काली, वे सभी माएँ थीं। लेकिन गोरी माओं के बच्चों का किसीने जबरन अपहरण नहीं किया था।

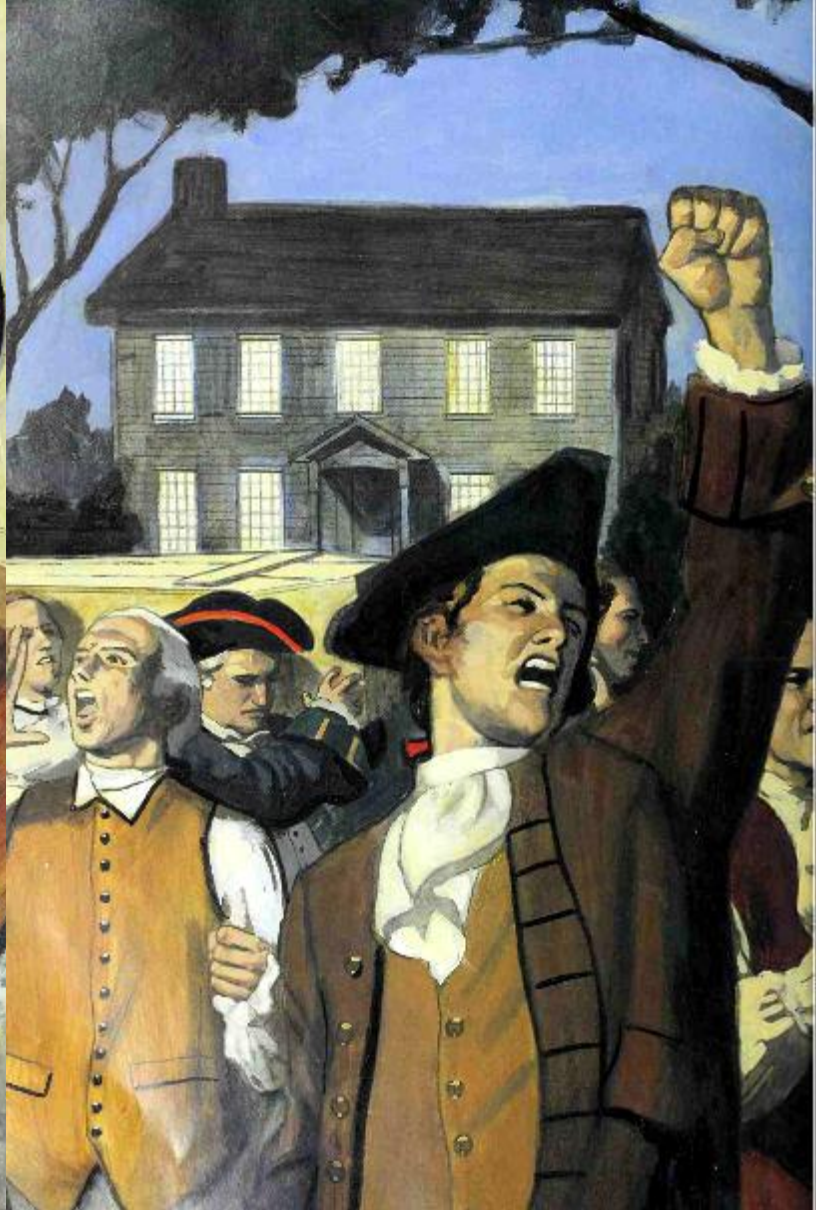

एक छिपा हुआ गुस्सा

"आज़ादी, संपत्ति का अधिकार, और स्टाम्प टैक्स से छुटकारा", गली में लोगों के एक झुण्ड से आती भारी गलों की ये चीखती आवाज़ें व्हीट्ली के बंगले के अंदर तक सुनाई दे रही थीं। व्हीट्ली परिवार अपने घर की खिड़कियों से देख रहा था कि यह अराजक सी भीड़ बढ़ती ही जा रही थी।

लगभग एक दर्ज़न देशभक्त अपने कन्धों पर एक ताबूत ले जा रहे थे, जिसमे बोस्टन के नव-नियुक्त स्टाम्प टैक्स अधिकारी का एक पुतला रखा हुआ था। इंग्लैंड की सरकार द्वारा लगाए गए एक नए टैक्स को लेकर बोस्टन के लोग गुस्से से पागल हुए जा रहे थे। यह टैक्स हरेक अख़बार, कानूनी दस्तावेज़, पत्र, सूचना-ज्ञापन, और यहाँ तक कि ताश की गड्डियों पर भी लगाया गया था। यह भीड़ टैक्स अधिकारी के कार्यालय तक पहुंची, और उन्होंने कार्यालय में आग लगा दी। फिर वे टैक्स अधिकारी के घर में घुस गए, और उसकी खिड़कियां तोड़ने लगे।

तब फिलिस ने आज़ादी के विषय पर विचार करना प्रारम्भ किया। जिस उपनिवेश में वह स्वयं एक गुलाम की ज़िन्दगी जी रही थी, वहां के लोग खुद ही इंग्लैंड की गुलामी से आज़ादी पाने की कोशिश कर रहे थे। और किंग स्ट्रीट के उस घर से वह इस नए उपजते हुए संघर्ष का दृश्य देख रही थी।

अब फिलिस बोस्टन की सड़कों पर हो रही इस हिंसा के विषय में लिखने लगी, और कभी-कभी वह अपनी गुलामी में निहित हिंसा के बारे में भी सोचती और लिखती। "अमेरिका" शीर्षक की अपनी कविता में उसने स्टाम्प कानून के बारे में लिखा जिसे इंग्लैंड ने अपने उपनिवेशों पर थोपा था:

अपने प्यारे बेटे पर उसने थोप दिए कुछ नए कर,
और बना डाला एक काला कानून।
मत रो अमेरिका, मत रो मेरे बच्चे।
ब्रिटैन ने कहा, बड़े प्यारे और मधुर शब्दों में।

अक्सर एक ही कविता में अमेरिका की आज़ादी का संघर्ष, और फिलिस की अपनी अपहरण और गुलामी की दास्तान, दोनों की झलक एक साथ नज़र आती थी। एक कविता में फिलिस दर्शाती है, कि आज़ादी के प्रति उसके प्रगाढ़ प्रेम के मूल में क्या है। "मैंने जीवन के बचपन में प्रवेश ही किया था, कि उन्होंने मुझे वंचित कर दिया, मेरी उस प्यारी और सुखमय मातृभूमि अफ्रीका से।" और वह अक्सर विचार करती कि किस प्रकार उसके माता-पिता उसकी चिंता करते होंगे : "कैसे-कैसे भयावह दुःख प्रताड़ित करते होंगे, मेरे माता-पिता के हृदयों को?"

फरवरी १७७० में नौजवान देशभक्तों के एक गुस्सैल समूह ने एक ब्रिटिश अधिकारी के घर को चारों ओर से घेर लिया। वह अधिकारी अपनी बन्दूक लेकर बाहर निकला और भीड़ पर गोलियां चलाने लगा। क्रिस्टोफर स्नाइडर के सीने में गोली लगी, और वह वहीं गिर कर मर गया। वह केवल ग्यारह वर्ष का था। एक बालक की मृत्यु से हर कोई स्तब्ध रह गया। शायद स्वयं ब्रिटेन के लोग भी, फिलिस को लगा। और क्रिस्टोफर स्नाइडर की मौत के बारे में लिखी अपनी कविता में फिलिस ने हर व्यक्ति के हृदय में चुपचाप उफनते उस रोष के बारे में लिखा, जो एक निर्दोष बालक की निर्मम हत्या से जन्मा था। फिलिस ने क्रिस्टोफर को स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम शहीद की संज्ञा दी।

क्रिस्टोफर स्नाइडर की मृत्यु के दो सप्ताह बाद और हिंसा हुई, और रक्त बहा। और इस सब की शुरुआत हुई फिलिस के घर की ही सड़क पर, महज़ बर्फ के गोलों से हुई लड़ाई से। कुछ लोगों का एक समूह ब्रिटिश सिपाहियों पर बर्फ के गोले फेंकने लगा। एक सिपाही ने अपनी बंदूक तानी और गोली चला दी। और फिर तो खून-खराबा हो गया।

फिलिस ने इस खून-खराबे पर भी कविता लिखी। इस हिंसा में मारा गया एक व्यक्ति अश्वेत था, जो पहले गुलाम रह चुका था। उसका नाम था क्रिस्पस ऐटक्स। इस स्वतंत्रता संग्राम का वह पहला अश्वेत शहीद था।

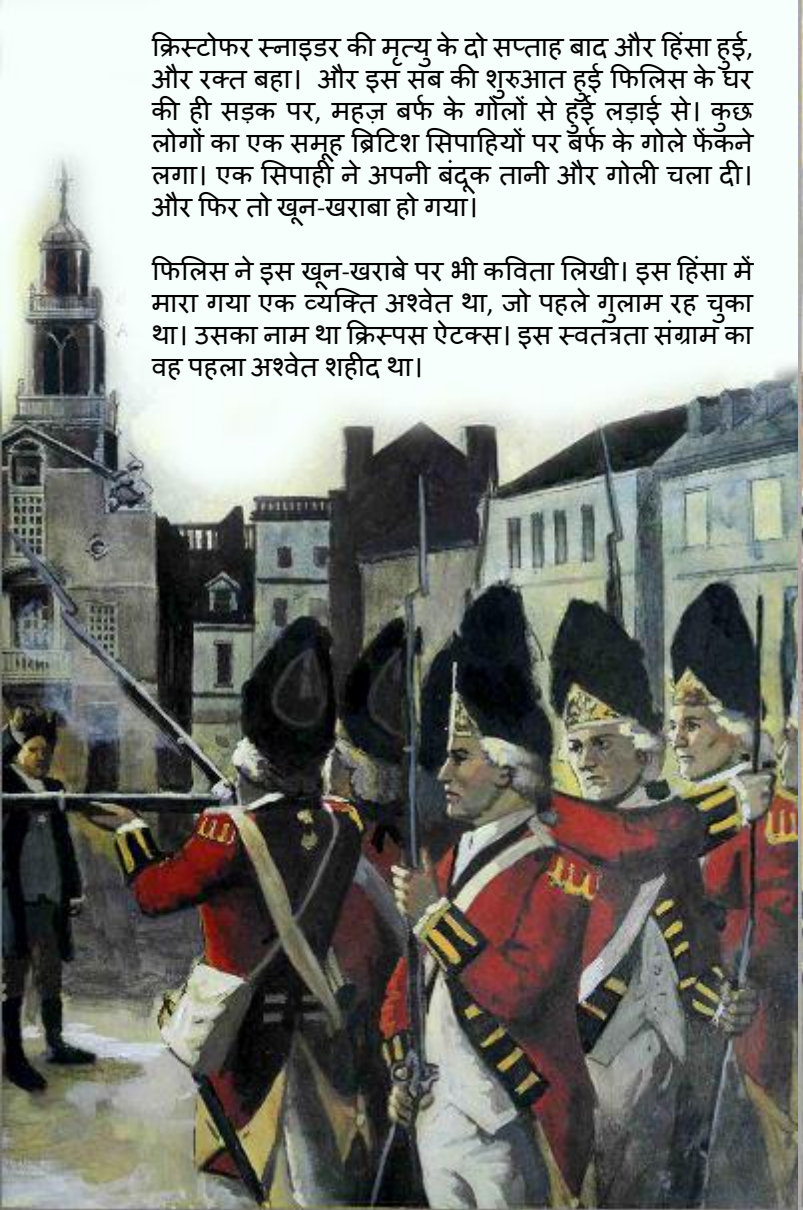

मेरी फिलिस

"इसका साहस कैसे हुआ, मेरी फिलिस को अपने बगल में बैठाने का", सुज़ाना व्हीट्ली गुस्से से तमतमाने लगीं, जैसे ही बग्घी उनके घर के सामने आकर रुकी। फिलिस, जो सर्दी और अस्थमा से पीड़ित थी, इस ठन्डे मौसम में बग्घी चालक प्रिंस के बगल में उसी की सीट पर बैठी थी।

सुज़ाना व्हीट्ली फिलिस के स्वास्थ्य को लेकर काफी परेशान रहती थीं। प्रिंस की इस बात पर बहुत डांट पड़ी, कि उसने फिलिस को अपने पास क्यों बैठाया, खास कर इस ठन्डे मौसम में। फिलिस बड़ी दुविधा में थी। गोरे घरों में वह सबके साथ न बैठ कर अलग छोटी मेज़ पर बैठती थी, लेकिन इस नीग्रो के साथ बग्घी में एक ही बेंच पर उसका बैठना उचित नहीं था। उसकी त्वचा काली थी, लेकिन उसकी शिक्षा गोरों के समान ही हुई थी। लेकिन फिर भी उसे गोरों के साथ बैठने की इजाज़त नहीं थी, सिवाय व्हीट्ली परिवार के घर में। आखिर उसकी सही जगह थी कहाँ? फिलिस को लगता था कि वह दो एकदम भिन्न संसारों के बीच त्रिशंकु की तरह लटकी हुई थी। यहाँ तक कि गिरिजाघर जैसी जगह में भी, जहाँ वह व्हीट्ली दम्पति के साथ जाया करती थी, नीग्रो लोगों के बैठने का स्थान गोरों से अलग था।

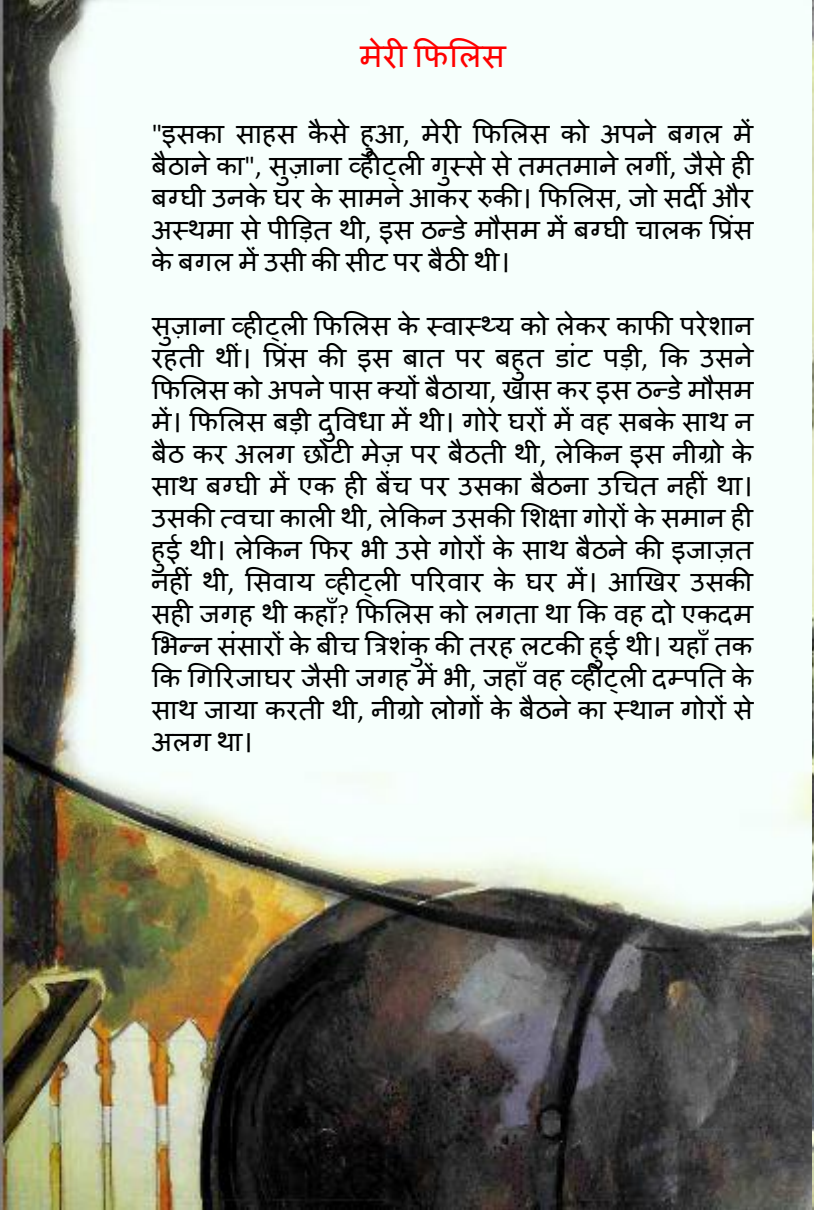

लेकिन फिर भी फिलिस को गिरिजे में बहुत अच्छा लगता था। धर्म-शिक्षा देने के लिए इंग्लैंड से अमेरिका आये पादरी जॉर्ज वाइटफील्ड ने तो जैसे उसे मंत्रमुग्ध सा कर दिया था। पादरी वाइटफील्ड का मानना था कि सच्ची ईसाइयत का अर्थ है हर व्यक्ति के प्रति प्रेम, "अनाथों, दरिद्रों, रेड-इंडियनों, और गुलामों", सभी के प्रति। पादरी तो यहाँ तक कहते थे कि गौरों द्वारा अपने अश्वेत भाइयों को गुलाम बनाया जाना एक पाप-कार्य है। फिलिस की कविताओं का एक प्रमुख विषय था वह आध्यात्मिक संसार जिसकी बातें पादरी वाइटफील्ड करते थे, और उनका यह कथन कि ईसाइयत का ईश्वर कभी रंगभेद नहीं करता। इस आध्यात्मिक संसार में फिलिस को एक आज़ादी का अनुभव होता था, अपनी कविताओं की दुनिया में न वह गोरी थी, और न ही नीग्रो। जब पादरी वाइटफील्ड का निधन हुआ, फिलिस केवल सोलह वर्ष की थी। उनकी मृत्यु के शोक ने उसे झकझोर सा दिया। जैसे उसकी माँ की स्मृति उसे सूर्य की याद दिलाती थी, उसी प्रकार जॉर्ज वाइटफील्ड की स्मृति भी। चर्च में प्रार्थना के समय न्यू इंग्लैंड के निवासियों के मन में वे एक नए प्रकाश का संचार करते थे। इस प्रकार, एक बार फिर, फिलिस के मानस-पटल पर चमकते हुए सूर्य की वह छवि और अधिक प्रगाढ़ हो गई। जॉर्ज वाइटफील्ड के सम्मान में उसने यह कविता लिखी।

"क्षुब्ध और हताश से बैठे हैं हम, उसके अस्त होने पर।
जो इतना देदीप्यमान था पहले, अब अस्ताचल में चला गया।"

यह कविता पर्चों पर छाप कर अमेरिका में ही नहीं, इंग्लैंड में भी प्रसारित की गई, और अनेकों लोगों ने इसे रुचिपूर्वक पढ़ा। सत्रह वर्ष की आयु में फिलिस अचानक जग-प्रसिद्ध हो गई थी।

परीक्षा

वह १७७२ की वसंत ऋतु का एक सुहावना दिन था, लेकिन अदालत के अंदर की हवा अभी भी ठंडी थी। अठारह विद्वान व्यक्ति एक अर्ध-वृत्त में बैठे थे, और फिलिस को उनके मध्य खड़ा किया गया था। ये सभी प्रतिष्ठित लोग थे। इनमे शामिल थे, उपनिवेश के गवर्नर जॉन हैनकॉक, लेफ्टिनेंट गवर्नर थॉमस हचिंसन, जाने-माने व्यापारी एंड्रू ऑलिवर, और एक विशिष्ट मंत्री।

फिलिस जब सर्व-प्रथम बोस्टन आई थी, तब की तरह वह लगभग निर्वस्त्र नहीं थी, और न ही उसके शरीर पर तब की तरह तेल पुता हुआ था। लेकिन एक बार फिर कुछ गोरे अजनबियों द्वारा उसका मूल्याङ्कन किया जाना था। इन लोगों ने फिलिस की लिखी कविताओं को पढ़ा था, लेकिन उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि कोई नीग्रो अफ्रीकन बिना किसी अन्य की सहायता के उन्हें लिख सकता है। लेकिन उसकी मालकिन, एक संभ्रांत ईसाई महिला, और उसके पति ऐसा ही कह रहे थे। वे तो यह भी चाहते थे कि ये कवितायें एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हों। यानि एक नीग्रो महिला द्वारा लिखी गई पुस्तक? उस समय के लिए यह विचार मात्र ही एकदम बेहूदा और हास्यास्पद था।

फिलिस के शिक्षित होने का प्रमाण जांचे बिना ये कवितायें भला कैसे प्रकाशित हो सकती थीं। कोई नहीं जानता कि फिलिस के शिक्षित होने की परीक्षा लेने के लिए उन्होंने उससे क्या पूछा। शायद उन्होंने ग्रीक भाषा के शब्दों की संधि के नियम पूछे हों, या फिर शायद उससे उसके चहेते अंग्रेजी कवि जॉन मिल्टन की कोई कविता सुनाने को कहा हो।

लेकिन निश्चय ही फिलिस उन्हें आश्वस्त करने में सफल रही होगी, क्योंकि उन्हें विश्वास हो गया कि वे कवितायें फिलिस ने ही लिखी हैं, और अपने निर्णय में उन्होंने लिखा, "फिलिस, एक नौजवान नीग्रो किशोरी, जो अभी कुछ वर्ष पहले ही जब अफ्रीका से लाई गई थी तो एक अनपढ़ गंवार थी, और अब एक गुलाम है," ने ही ये कवितायें लिखी हैं।

इस वज़नी प्रमाण पत्र के बावजूद बोस्टन के प्रकाशक एक नीग्रो के लेखन को प्रकाशित करने को तैयार नहीं हुए। लेकिन व्हीट्ली दम्पति, खासकर सुज़ाना, इतनी आसानी से हार मानने वाले नहीं थे, क्योंकि वे फिलिस को अपनी पुत्री के समान प्यार करने लगे थे। सुज़ाना ने ठान ली कि वह अपनी पुत्री के अधिकारों के लिए संघर्ष करेगी, भले ही इसके लिए फिलिस को इंग्लैंड ही क्यों न भेजना पड़े।

एक सम्राट से मुलाकात

८ मई १७७३ के दिन फिलिस व्हीट्ली ने अपने जीवन की दूसरी समुद्री यात्रा प्रारम्भ की। यह उसकी पहली यात्रा से बिलकुल भिन्न थी। इस बार वह दुर्गन्धपूर्ण और अँधेरे सामान-कक्ष में दबी-कुची नहीं बैठी थी, बल्कि सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण अपने निजी कक्ष में यात्रा कर रही थी। इस यात्रा का उद्देश्य था अपने प्रकाशक से, और उन सभी ब्रिटिश लोगों से भेंट करना जो उसकी कवितायें पढ़ कर प्रभावित हुए थे। इनमें से बहुत से लोग एक ईसाई मिशनरी संस्था के सदस्य थे, और पादरी जॉर्ज वाइटफील्ड के मित्र व प्रशंसक भी। इनमें से दो लोगों, हंटिंगटन की काउंटेस, और डार्टमाउथ के शासक, ने अपने पैसे और संपर्कों का प्रयोग करके पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था की थी।

इंग्लैंड पहुँच कर फिलिस व्हीट्ली जब जहाज़ से उतरी, तो पिछली बार की भांति वह गुलामों के नीलामी बाजार में नहीं उतर रही थी, बल्कि वह ब्रिटिश सभ्य समाज के बीच उतर रही थी। उसकी संरक्षक, हंटिंग्टन की काउंटेस ने अनेक विशिष्ट परिवारों के भव्य बंगलों में फिलिस की मेहमान-नवाज़ी का इंतज़ाम किया था। अमेरिका की इस नौजवान गुलाम कवियित्री से हर कोई भेंट करना चाहता था। यहाँ तक कि इंग्लैंड के सम्राट भी उससे मिलना चाहते थे।

फिलिस को इंग्लैंड आये कुछ ही दिन हुए थे कि उसे समाचार मिला कि सुज़ाना व्हीट्ली बहुत बीमार हैं। फिलिस जान गई कि उसे अगले ही जहाज़ से वापस लौटना होगा। सम्राट से भेंट करने के लिए अब समय नहीं था।

हालाँकि उसकी इंग्लैंड यात्रा बहुत छोटी ही रही थी, लेकिन वह समझती थी कि इस यात्रा में कुछ बहुत खास हुआ था। जैसे ही जहाज़ ने अपनी यात्रा प्रारम्भ की, और इंग्लैंड का समुद्र तट आँखों से ओझल होने लगा, फिलिस का हृदय इस प्रबल अहसास से भरा था कि इंग्लैंड ने वास्तव में किसी गुलाम महिला की पुस्तक प्रकाशित की थी। और यह वही इंग्लैंड था जिसकी अपार ताकत से सभी उपनिवेश कुढ़ते थे। यह किसी अश्वेत अमेरिकन महिला द्वारा लिखी गई सबसे पहली पुस्तक थी।

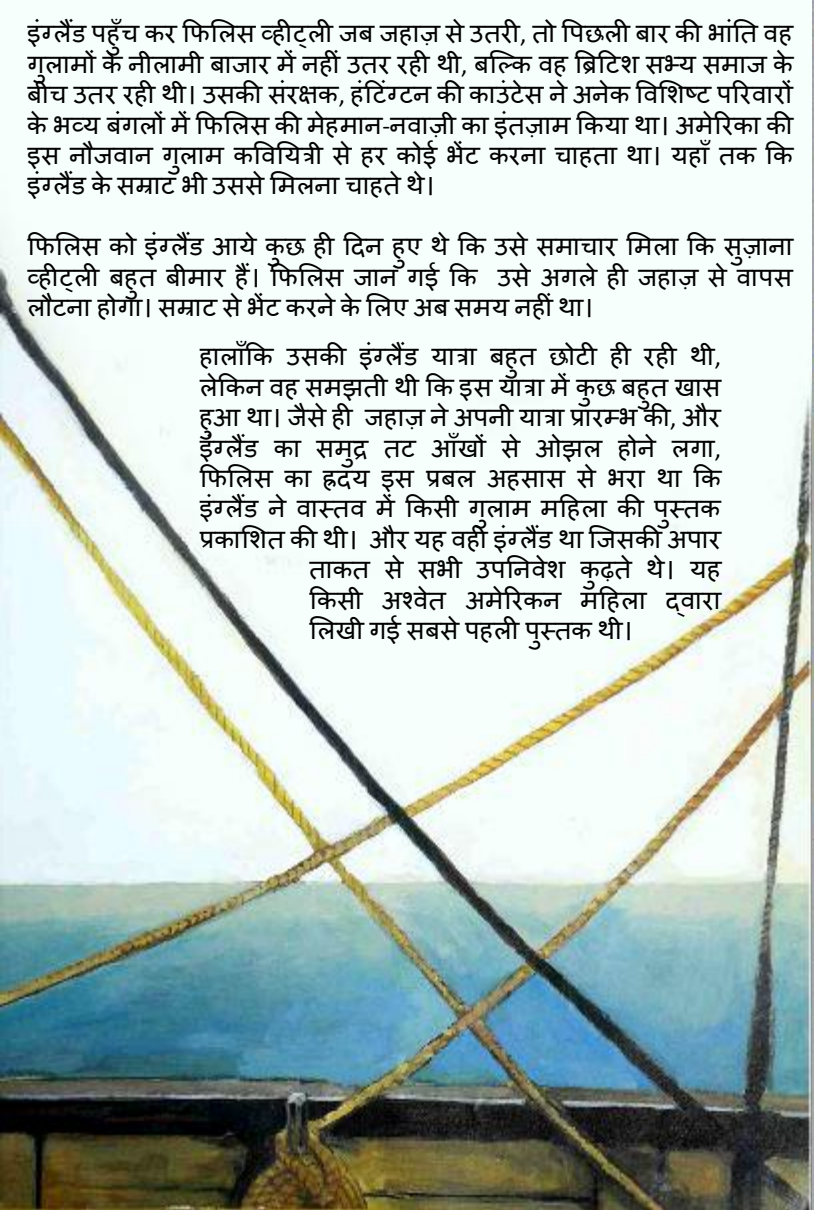

पुस्तकें, आज़ादी, और इन्क़िलाब

अमेरिका जैसे इंग्लैंड के उपनिवेश अपनी परतंत्रता के कारण दिन-प्रतिदिन क्षुब्ध और असंतुष्ट होते जा रहे थे। फिलिस की अमेरिका वापसी के चार माह बाद, जॉन हैनकॉक, यानी वह व्यक्ति जिसने कभी फिलिस की योग्यता पर संदेह किया था, ने स्वयं वह दृश्य देखा जिसकी परिकल्पना उसने स्वयं ही रची थी। कड़ाके की सर्दी वाली उस रात को बोस्टन के बंदरगाह में रेड अमेरिकनों के भेष में कुछ देशभक्त चाय के बक्सों से भरे एक जहाज़ में चुपके से घुस गए, और वे बक्से उठा कर समुद्र में फेंकने लगे।

किंग स्ट्रीट के अपने घर से फिलिस यह नज़ारा तो नहीं देख सकती थी, लेकिन इस सब हंगामे की आवाज़ें उसे उस कमरे में साफ़ सुनाई दे रही थीं, जहाँ वह अपनी बीमार मालकिन की देखभाल कर रही थी। उसकी पुस्तक की पहली खेप एक-दो दिनों में ही आने वाली थी, इसी बंदरगाह में, जिसमें इस समय ये चाय के बक्से तैर रहे थे।

२४ जनवरी, १७७४ को इस पुस्तक के अमेरिकी संस्करण का एक विज्ञापन बोस्टन गजट अख़बार में प्रकाशित हुआ :

आज प्रकाशित हो रही है,
लेखिका के एक सजीले नक्काशीदार चित्र से सुसज्जित
(मूल्य : ३ शिलिंग ४ पेंस)
"काव्य-कृतियां"
लेखिका : फिलिस व्हीट्ली
एक नीग्रो तरुणी
विक्रेता: मेसर्स कॉक्स एन्ड बेरी
किंग स्ट्रीट बोस्टन स्थित दुकान से प्राप्य

पुस्तक की बिक्री अच्छी हुई। तीन सौ अतिरिक्त प्रतियों का आर्डर भेजा गया, और वे ६ मई १७७४ को पहुँचीं। अगर वे तीन हफ्ते देर से आतीं, तो वे पहुंच ही न पातीं, क्योंकि १ जून को ब्रिटिश संसद के आदेशानुसार बोस्टन बंदरगाह बंद कर दिया गया। अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम शुरू होने ही वाला था। ब्रिटिश सरकार ने सेना के नए दस्ते बोस्टन भेज दिए थे। लाल वर्दी पहने ये सैनिक सभी घरों में ठहरे थे, व्हीट्ली निवास में भी। ।

बंदरगाह की घेरेबंदी के कारण आवश्यक वस्तुओं की कमी होने लगी। इस प्रकार की चालों से इंग्लैंड उपनिवेशों को घुटने टेकने पर मजबूर करना चाहता था। लेकिन मार्बलहेड स्थित मछुआरों की बस्ती ने कॉड मछलियों की एक बड़ी खेप बोस्टन वासियों के लिए भेजी। करीबी शहर चार्ल्सटाउन ने चावल भेजा, और सुदूर दक्षिण के बाल्टिमोर ने डबलरोटी और मदिरा भेजी। दूरस्थ कनेक्टिकट से भी देशभक्त लोग पैदल चल कर २५८ भेड़ों के झुण्ड को लेकर बोस्टन आये। उपनिवेश-वासियों के दिलो-दिमाग़ से कविता कोसों दूर थी। लेकिन फिलिस ने लिखना नहीं छोड़ा।

उसी वर्ष बसंत ऋतु के आते-आते सुज़ाना का देहांत हो गया, लेकिन अपने प्रस्थान से पहले उसने फिलिस की सफलता जी भर कर देखी। फिलिस और मिस्टर व्हीट्ली ने फिलिस के इंग्लैंड से लौटने के तुरंत बाद ही उसे दासत्व से मुक्ति प्रदान कर दी थी। लेकिन जिस घर में फिलिस को पालन-पोषण और प्रेम मिला था, उसे छोड़ कर जाने का विचार तक उसके मन में नहीं आया।

एक काव्यकार की आवाज़

मोमबत्ती की रौशनी में फिलिस अपने कमरे में बैठी थी। उधर क्षितिज पर सूर्योदय हो रहा था, और इधर फिलिस के मानस-पटल पर अनेकों स्मृति-चित्र घुमड़ रहे थे। सूर्य को जल चढ़ाती उसकी माँ की स्मृति, और अफ्रीका के हरे-भरे अंतहीन मैदान, जिनमे ऊंची उगी घास हवा से लहलहा रही थी। और उसी हवा ने उस जहाज़ के पाल को भी गति दी थी, जो उसका अपहरण करने आया था।

फिलिस अपने मन में उगते सूर्य की छवि को देखने का प्रयास कर रही थी। वह उस कविता का प्रत्युत्तर लिखने का प्रयास कर रही थी, जो एक अँगरेज़ नौसेना अधिकारी ने उसे लिख कर दी थी। एक नए कानून के कारण बोस्टन निवासी ब्रिटिश सैन्य अधिकारियों को अपने घरों में ठहराने को बाध्य थे, और ऐसे ही दो लोग व्हीट्ली-निवास में भी ठहरे हुए थे। इस कविता में वह उस अधिकारी को अपने मूल निवास-स्थान अफ्रीका का वर्णन करके बताना चाहती थी। वह अफ्रीका के सुन्दर परिदृश्य की यादें ताज़ा करने की कोशिश कर रही थी। आखिर वह एक ही सूर्य तो था, जो वहाँ भी चमकता था और यहाँ भी, और इंग्लैंड में भी। अपने मन की इन छवियों को उसे इन अधिकारीयों तक पहुँचाना ही होगा, जो इंग्लैंड के सम्राट की आज्ञा से अमेरिका को झुकाने आये थे। उसे यह करना ही होगा, क्योंकि वह एक कवियित्री थी।

उपसंहार

ब्रिटिश नौसेना अधिकारी को "प्रत्युत्तर" कविता लिखने के एक वर्ष बाद फिलिस व्हीट्ली की भेंट अमेरिकी सेना के प्रमुख जॉर्ज वाशिंगटन से हुई। जनरल वाशिंगटन उस समय अपने सैनिकों के साथ कैंब्रिज, मस्सचुसेट्टस स्थित अपने मुख्यालय में ठहरे हुए थे। कुछ समय पहले फिलिस ने उन्हें एक पत्र लिखा था, जिसमें उसने अपनी एक कविता भी साथ भेजी थी, जिसका शीर्षक था, "महामहिम जनरल वाशिंगटन के प्रति"।

इसके उत्तर में २८ फरवरी, १७७६ को लिखे अपने पत्र में उन्होंने उसे "मिस फिलिस" कह कर सम्बोधित किया। इतिहास के विद्वानों का मानना है कि जॉर्ज वाशिंगटन के जीवन में शायद यह पहला अवसर था जब उन्होंने किसी नीग्रो महिला को "मिस" कह कर सम्बोधित किया हो। उसी वर्ष मार्च के महीने में इस कवियित्री और इस जनरल की भेंट कैंब्रिज में हुई। फिलिस ने जो कविता उन्हें लिख कर भेजी थी, वह अगले महीने "पेनसिलवेनिया पत्रिका" में प्रकाशित हुई, जिसके संपादक उस समय स्वयं थॉमस पेन थे।

१७७८ में फिलिस ने जॉन पीटर्स से विवाह कर लिया, जो कि एक नीग्रो व्यापारी था और अपना व्यापार ज़माने की कोशिश कर रहा था। पीटर्स के साथ फिलिस ने तीन बच्चों को जन्म दिया, लेकिन वे सभी शिशु अवस्था में ही चल बसे। १७८३ तक अमेरिकन स्वतंत्रता संग्राम समाप्त हो गया था, और १७८४ में फिलिस व्हीट्ली ने अपनी अंतिम कविता की रचना की, जिसका शीर्षक था "स्वाधीनता और शांति" और जो युद्ध के समापन के प्रति समर्पित थी। उसी वर्ष फिलिस व्हीट्ली का निधन बड़ी निर्धन अवस्था में बोस्टन के एक बोर्डिंग हाउस में हो गया। वह केवल छत्तीस वर्ष की थी, लेकिन अमेरिकी साहित्य पर वह अपनी अमिट छाप छोड़ चुकी थी।

लेखिका का कथन

एक लेखक के नाते मैं फिलिस व्हीट्ली के जीवन गाथा की ओर आकर्षित हुई, केवल इसलिए नहीं कि यह एक ऐसी अनपढ़ गुलाम लड़की की कहानी थी जो एक सफल कविताकार बन गई, बल्कि इसलिए कि यह एक आवाज़ की कहानी थी, और उस आवाज़, पहचान, और आज़ादी के रिश्तों की भी। दासत्व व अन्य प्रकार के दमन के बीच समान बात यह है कि वे दोनों ही अपने शिकार को मूक बना देते हैं। इस प्रकार मूक बनने को बाध्य होना अपनी मानवता से वंचित हो जाने के समान ही है। यह भी एक कारण था कि गुलामों को लिखना-पढ़ना सीखने की इजाज़त नहीं थी। जब हमारी आवाज़ दबा दी जाती है, तो एक इन्सान के तौर पर हमारी अस्मिता बहुत घट जाती है, न केवल एक नस्ल के तौर पर, बल्कि मानव-मात्र होने के नाते भी। फिलिस को पहली आज़ादी तब मिली, जब उसने पढ़ना-लिखना सीखा, और कविता के माध्यम से अपनी स्वयं की आवाज़ को पहचाना। और दूसरी आज़ादी उसे तब मिली, जब उसे उसका आज़ादी-नामा सौंपा गया।

चित्रकार का कथन

मुझे फिलिस व्हीट्ली की कथा बहुत प्रेरक लगी, क्योंकि यह अमेरिकी इतिहास की एक विलक्षण कहानी है। इस नौजवान गुलाम लड़की ने एक घातक अपहरण, अमेरिका तक की एक विषम समुद्री यात्रा, और फिर एक गुलाम के रूप में अपनी बिक्री, यह सब कुछ सहन करके भी हिम्मत नहीं हारी। वह एक ऐसे समय में एक सफल कवियित्री बनी जब कि गुलामों का शिक्षा ग्रहण करना तक वर्जित था। फिलिस व्हीट्ली ने सबको यह दिखा दिया कि प्रयत्न करने पर कुछ भी कर पाना संभव है, और आज़ाद इंसान के लिए कोई भी लक्ष्य प्राप्त करना संभव है।